بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुतबा जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 17 जनवरी 2025, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.

अब्दुल्लाह बिन रवाहा नामक सैन्य अभियान जो कि उसैर बिन रिज़ाम की ओर भेजा तथा उमरू बिन उमय्या ज़मरी नामक सैन्य अभियान के परिपेक्ष में सीरत-ए-नबवी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का बयान।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-17.01.2025
محلہ احمدیہ قادیان-پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशहहुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहा तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- कि आज जिन सिराया का वर्णन होगा उनमें से एक सिरिय्या अब्दुल्लाह बिन रवाहा के नाम से उसैर बिन रिज़ाम की ओर भेजा था। यह सिरिय्या शव्वाल 6 हिजरी में उसैर अथवा युसीर बिन रिज़ाम की ओर खैबर के इलाक़े में हुआ।

इसके विस्तार में बयान हुआ है कि जब अबू राफ़े सलाम बिन अबिल हक़ीक़ की हत्या हुई तो यहूदियों ने उसैर बिन रिज़ाम को अपना मुख्या नियुक्त किया। वह हहूदियों में खड़ा होकर भाषण देना लगा कि मैं वह काम करूंगा जो मेरे साथियों में से किसी एक ने भी नहीं किया। मैं क़बीला गत्फ़ान की ओर जाता हूँ और उनको एकत्र करता हूँ और हम मुहम्मद (सलल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ओर जाकर उनके घरों में घुस जाएँगे। जब भी कोई अपने दुश्मन के घर में जाकर हमला करता है तो वह अपने उद्देश्य में एक अर्थ में सफल हो ही जाता है। अतएव वह गत्फ़ान तथा अन्य क़बीलों की ओर चला गया और उनको रसूलुल्लाह स. के विरुद्ध लड़ने के लिए जमा करने लगा।

इसके विस्तारण में हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ी. ने लिखा है कि जब आँहज़रत स. को इन परिस्थितियों की सूचना मिली तो आप स. ने तुरन्त अपने एक अंसारी सहाबी अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी. को तीन अन्य सहाबियों के साथ खैबर की ओर रवाना फ़रमाया। इस प्रकार अब्दुल्लाह

बिन रवाहा रज़ी. तथा उनके साथी गए और गुप्त रूप से समस्त सूचनाएं एवं जानकारी लेकर तथा पुष्टि करके कि ये सब सूचनाएं सत्य हैं, वापस आ गए। इन्हीं दिनों संयोगवश एक गैर मुस्लिम व्यक्ति ख़ारजा बिन हुसैल खैबर की ओर से मदीने आया और उसने भी अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी. की पुष्टि की।

इस पुष्टि के बाद आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी. के नेतृत्व में तीस सहाबीयों की एक पार्टी खैबर की ओर रवाना फ़रमाई। इस वार्ता से जो खैबर में अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी. और उसैर बिन रिज़ाम में हुई, यह ज़ाहिर होता है कि आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का उद्देश्य यह था कि उसैर को मदीने बुलाकर उसके साथ कोई ऐसा समझौता किया जाए जिससे इस फ़ितने फ़साद पर रोक लग जाए और देश में अमन एवं शान्ति की स्थिति पैदा हो। इस बात को पूरा करने के लिए आप स. इतना अधिक तत्पर थे कि यदि उसैर को खैबर के इलाक़े का अमीर भी बनाना पड़े तो स्वीकार कर लिया जाए। उसैर को, जो अति लालसा पूर्ण था, यह भी सम्भव है कि उसके दिल में कोई अन्य इच्छा छुपी हुई हो, यह सुझाव पसंद आया अथवा कम से कम उसने यह प्रकट किया कि मुझे यह सुझाव पसंद है। अतः उसैर, अब्दुल्लाह बिन रवाहा की पार्टी के साथ मदीने चलने के लिए तैयार हो गया और अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी. की भाँती स्वं उसने भी तीस यहूदी अपने साथ ले लिए। जब ये दोनों पार्टियां खैबर से निकल कर एक कर्क़रा नामक स्थान पर पहुँची, जो खैबर से छः मील की दूरी पर था, तो उसैर का विचार बदल गया अथवा यदि उसकी नीयत पहले से ही ख़राब थी तो यूं समझना चाहिए कि उसकी अभिव्यक्ति का समय आ गया। अतएव इसी स्थान पर रास्ते में ही मुसलमानों तथा यहूदियों में तलवारें चल गईं और यद्यपि दोनों पार्टियां संख्या की दृष्टि से समान थीं तथा यहूदी लोग मानसिक रूप से पहले ही तैयार थे और मुसलमान बिलकुल इस प्रकार की सोच से मुक्त थे, परन्तु ख़ुदा का फ़ज़ल ऐसा हुआ कि कुछ मुसलमान तो निश्चित ही ज़ख़्मी हुए किन्तु उनमें से किसी के प्राणों की हानि नहीं हुई, परन्तु दूसरी ओर सारे यहूदी अपने विद्रोह का स्वाद चखते हुए धूल में मिल गए।

जब सहाबियों की यह पार्टी मदीना वापस पहुँची और आँहज़रत स. को इस घटना की सूचना मिली तो आप स. ने मुसलमानों के कुशलता पूर्वक बच जाने पर ख़ुदा का शुक्र अदा किया और फ़रमाया कि शुक्र करो कि ख़ुदा ने तुम्हें इस दुष्ट पार्टी से मुक्ति दी। इस घटना के विषय में कुछ मसीही इतिहासकारों ने यह आपत्ति की है कि जैसे अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी. की पार्टी उसैर इत्यादि को खैबर से इसी नीयत से निकाल कर लाई थी कि रास्ते में अवसर मिलते ही उन्हें मार दिया जाए, किन्तु जैसा कि बयान किया जा चुका है कि इतिहास में इस बात का कोई प्रमाण नहीं मिलता कि मुसलमान इस नीयत से वहाँ गए थे, बल्कि यदि विचार किया जाए तो अन्य साक्ष्य को छोड़कर भी केवल अब्दुल्लाह बिन उनैस रज़ी. के ये शब्द ही कि ऐ दुश्मने ख़ुदा! क्या ग़द्दारी की नीयत है? और फिर आँहज़रत स. के ये शब्द कि शुक्र करो ख़ुदा ने तुम्हें इस दुष्ट पार्टी से मुक्ति दी, इस बात को साबित करने के लिए पर्याप्त हैं कि मुसलमानों की नीयत बिलकुल साफ़ और शान्ति पूर्ण थी।

फिर है उमरू बिन उमय्या ज़मरी नामक सिरिय्या, ये अबू सुफ़यान की ओर गया था। इब्ने हिश्शाम, इब्ने कसीर और तबरी इत्यादि ने इस सिरिय्ये को चार हिजरी में रजीअ नामक घटना के

बाद बयान किया है, परन्तु इब्ने सअद और ज़र्कानी ने इस सिरिय्ये को छः हिजरी के सिराया के अंतर्गत बयान किया है। हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ी. ने भी सीरत खात्मुन्नबिय्यीन नामक पुस्तक में इस सिरिय्ये को छः हिजरी में बयान किया है।

इस सिरिय्ये का विवरण इस प्रकार है कि अबू सुफ़यान ने कुरैश के कुछ आदमियों को कहा कि क्या तुममें से कोई ऐसा नहीं है जो मुहम्मद (सलल्लाहु अलैहि वसल्लम) को धोके से मार डाले, जब वे बाज़ारों में चलते फिरते हों। अतएव अबू सुफ़यान के पास आदिवासियों में से एक आदमी इनके घर आया और कहा कि यदि तू मेरी सहायता करे तो मैं उनकी ओर जाऊंगा, यहाँ तक कि मुहम्मद (सलल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर हमला कर दूं और मेरे पास एक छुरा है जो गिद्ध के पर के समान है उसके द्वारा मैं मुहम्मद (सलल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर हमला करूंगा। फिर मैं किसी यात्री दल में छुप जाऊँगा और भाग कर उस क़ौम से आगे बढ़ जाऊँगा, क्यूँकि रास्ते खोजने में मैं अति निपुण हूँ। अतएव अबू सुफ़यान ने उसको ऊँट एवं यात्रा की सामग्री दे दी। वह रात को निकला तथा मदीने पहुँच कर रसूलुल्लाह स. के बारे में पूछने लगा यहाँ तक कि उसे आप स. के विषय में बताया गया तो उसने अपनी सवारी को बांधा, फिर आप स. की तरफ़ आया और आप स. बनू अब्दुल अशहल की मस्जिद में थे।

जब नबी करीम स. ने इसको देखा तो फ़रमाया निःसन्देह इस आदमी का इरादा धोका देने का है और अल्लाह तआला इसके तथा इसके इरादे के बीच में बाधा है। अतः जब वह आप स. पर हमला करने के लिए चला तो उसैद बिन हुज़ेर ने इसको इसकी चादर के अन्दर वाले किनारे की तरफ़ से पकड़ कर खींचा, तो अचानक उसके हाथ से छुरा गिर पड़ा, और वह पुकारने लगा कि मेरी मौत, मेरी मौत, अर्थात मुझे प्राणों की क्षमा दे दो। हज़रत उसैद रज़ी ने उसको गर्दन से पकड़ा, फिर छोड़ दिया। रसूलुल्लाह स. ने इस से फ़रमाया कि मुझे सच सच बताओ कि तुम कौन हो? उसने कहा कि मैं शरण चाहता हूँ। आप स. ने फ़रमाया कि हाँ, ठीक है। इसने अपना काम और जो कुछ अबू सुफ़यान ने इसके लिए पुरस्कार रखा था, बता दिया, तो आप स. ने उसको छोड़ दिया और आप स. के सद्व्यवहार को देख कर वह मुसलमान हो गया।

अबू सुफ़यान की इस रक्त रंजित योजना ने इस बात को और अधिक आवश्यक कर दिया कि मक्के वालों की योजनाओं तथा नीयत से अवगत रहा जाए। अतः आप स. ने अपने दो सहाबी रज़ी. अमरु बिन उमय्या ज़मरी और सलमा बिन असलम को मक्का की ओर रवाना फ़रमाया तथा अबू सुफ़यान की इस हत्या के षडयन्त्र और इसकी रक्त रंजित गतिविधियों को देखते हुए उन्हें अनुमति दी कि यदि अवसर मिले तो निःसन्देह इसलाम के इस दुष्ट शत्रु को नष्ट कर दें। परन्तु जब उमय्या तथा इनका साथी मक्का में पहुंचे तो सावधान हो गए और ये दो सहाबी अपनी जान बचा कर मदीने की ओर वापस लौट आए। रास्ते में उन्हें क़ुरैश के दो जासूस मिल गए जिन्हें क़ुरैश के सरदारों ने मुसलमानों की गतिविधियों का पता लेने और आँहज़रत स. के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए भेजा था और कोई आश्चर्य नहीं कि यह युक्ति भी कुरैश के किसी अन्य षड्यंत्र का ही रास्ता हो। परन्तु ख़ुदा की कृपा ऐसी हुई कि उमय्या और सलमा को इनकी जासूसी का पता चल गया, जिस पर उन्होंने उन जासूसों पर हमला कर दिया। अतः इस लड़ाई में एक जासूस तो मारा गया और दूसरे को

क़ैद करके वे अपने साथ मदीने वापस ले आए। हुज़ूरे अनवर ने इरशाद फ़रमाया कि शेष इंशाल्लाह आइंदा।

हुज़ूर पुर नूर ने दुआओं की तहरीक करते हुए फ़रमाया कि पाकिस्तान की स्थिति के लिए मैं दुआ करने को कहता रहता हूँ, इन हालात में कई बार बड़ी तेज़ी आ जाती है, और प्रशासन एवं सरकार भी, लगता है कि कट्टर पंथी मौलवियों के हाथों खिलौना बनी हुई है। पहले तो ये समाचार ही मिलते थे कि मस्जिद का मिनारा गिरा दिया अथवा महराब गिरा दिया, इनको यह आपत्ति थी, लेकिन अब डिस्का में कल उन्होंने सड़क बनाने के बहाने पहले नोटिस भेजा कि इतनी जगह हम लेंगे और वहां बुलडोज़र फेर कर जगह को साफ़ करेंगे, इसमें थोड़ा सा भाग मस्जिद के स्नान घर इत्यादि आते थे, लेकिन जब बुलडोज़र ले कर आए तो उन्होंने मौलवियों के कहने पर पूरी मस्जिद को धराशाही कर दिया और शहीद कर दिया। यह मस्जिद पुरानी बनी हुई है, देश विभाजन से पहले की बनी हुई थी और संभवतः हज़रत चौधरी ज़फरुल्लाह ख़ान साहब ने बनवाई थी। अतः ये आजकल अब इस हद तक बढ़ गए हैं, अल्लाह तआला ही है जो इनकी जल्द पकड़ के सामान पैदा फ़रमाए और इनकी चालों को इन पर ही लौटाए, इसलिए अहमदियों को, विशेष रूप से पाकिस्तान के अहमदियों को अत्यधिक दुआओं की ज़रुरत है, इस ओर ध्यान दें।

इसी तरह फ़िलिस्तीन के बारे में भी जो समझौता हो रहा है, कोई कहता है कि हो गया है, कभी कहा जाता है कि नहीं हुआ अथवा समझौते के बाद फिर घटनाएं हो रही हैं, तो इस बात पर कुछ लोग अकारण ही ख़ुशी प्रकट करने लग गए हैं परन्तु इनको समझना चाहिए कि दज्जाली शक्तियों का कोई भरोसा नहीं होता, ये कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं, इसलिए इतनी अधिक प्रसन्नता की आवश्यकता नहीं। इनके लिए दुआओं की भी ज़रुरत है और मुसलमानों को विवेक से काम लेकर अपने अधिकार प्राप्त करने की ओर भी प्रयास करना चाहिए, अल्लाह तआला मुस्लिम क़ौम को भी इसकी समझ दे (आमीन)

ख़ुत्बे के अन्त में हुज़ूरे अनवर ने तीन मृतकों शैख़ मुबारक अहमद साहब (नाज़िर दीवान, सदर अंजुमन अहमदिया रबवा) मुकर्रम मुहम्मद मुनीर इदलबी साहब आफ़ क़तर और मुकर्रम अब्दुल बारी तारिक़ साहब (इंचार्ज कम्पयूटर सेक्शन, वक्फ़-ए-जदीद, रबवा) का सदवर्णन करते हुए इनके जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने का ऐलान भी फ़रमाया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131